67

मसीह का क्रूस पर चढ़ाया जाना

(27:32-56)

यीशु के लिए परमेश्वर की मंशा को पृथ्वी पर पूरा करने अर्थात मनुष्यजाति के पापों के लिए बलिदान बनने का समय आ चुका था (देखें 20:28)। सिपाही उसे उस जगह पर ले गए, जहां उसने अपना लहू बहाना था, ताकि बहुत से लोगों को क्षमा किया जा सकता।

जब वे गुलगुता नामक स्थान पर पहुंचे तो सिपाहियों ने यीशु को क्रूस पर कीलों से ठोक दिया। उस पर "यहूदियों का राजा" होने का आरोप लगाया गया था। उसे पास से गुज़रने वालों, यहूदी अगुओं और यहां तक कि उसके दोनों ओर क्रूस पर चढ़ाए गए दो डाकुओं द्वारा सताया गया था। अन्त में यीशु ने अपनी आत्मा सौंप दी।

यीशु के क्रूस पर रहते समय और उसकी मृत्यु पर तीन घण्टे तक अन्धेरा, भूकम्प, पवित्र लोगों का जिलाया जाना और मन्दिर के पर्दे के फटने जैसी कई अलौकिक घटनाएं घटीं।

क्रूस का सफर (27:32)

[32]बाहर जाते हुए उन्हें शमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य मिला, उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले।

आयत 32. यीशु को "अपना क्रूस उठाए हुए" ले जाया गया (यूहन्ना 19:17)। "क्रूस" के लिए शब्द (*stauros*) आम तौर पर दिखाया जाता है कि केवल आड़े शहतीर (*patibulum*) के लिए हो सकता है, जिसमें सीधा शहतीर (*stipes*) न हो जैसा कि आम तौर पर दिखाया जाता है।[1] यीशु जैसी कमज़ोर स्थिति वाले व्यक्ति के लिए पूरा क्रूस उठाकर ले जाना बहुत भारी होगा।

दोषी ठहराए जाने वाले व्यक्ति के लिए अपने क्रूस वाला भाग उठाकर ले जाने की परम्परा थी। यूनानी इतिहासकार पलुटार्क ने लिखा है, "मरने के लिए जाने वाला हर अपराधी अपनी ही पीठ पर अपना क्रूस उठाकर ले जाए।"[2]

स्पष्टतया सिपाहियों के साथ यरूशलेम से **बाहर जाते हुए** यीशु में उस बड़े शहतीर के बोझ को उठाने की हिम्मत नहीं थी। वह रात भर जागा रहा था और उसने कुछ खाया या पीया भी नहीं होगा। इतनी मार पड़ने के कारण उसका काफी लहू भी बह गया था। सुसमाचार के किसी भी लेखक ने वास्तव में यह नहीं बताया है कि यीशु अपने बोझ के भार के नीचे गिरा हो, पर यह विचार करना तर्कसंगत है कि अपनी ऐसी हालत में वह बिना गिरे इतनी दूर शहतीर उठाकर नहीं ले जा सकता होगा।

उत्तर में सिपाहियों को **शमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य मिला। उन्होंने उसे बेगार में**

पकड़ा कि उसका क्रूस उठाकर ले चले। रोमी सिपाहियों को अधिकार था कि यहूदियों से अपना भार एक मील उठवा सकें। यीशु की बात कि ''जो कोई तुझे कोस भर ले जाए, तो उसके साथ दो कोस चला जा'' का आधार यही प्रथा थी (5:41 पर टिप्पणियां देखें)।

शमौन कुरेने से था, जो पश्चिम मिस्र की ओर उत्तरी अफ्रीका का एक नगर था। दोनों नियमों के बीच के काल के दौरान यहूदियों की काफी आबादी कुरेने में बस गई थी।[8] प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमें बताया गया था कि कलीसिया की स्थापना के समय पिन्तेकुस्त के दिन यहूदी लोग कुरेने से भी यरूशलेम में आए हुए थे (प्रेरितों 2:10)। प्रेरितों के काम की पुस्तक यह भी बताती है कि कुरेने और अन्य स्थानों के यहूदियों ने यरूशलेम में बसकर वहां एक आराधनालय बना लिया था (प्रेरितों 6:9)। शमौन भी एक यहूदी यात्री हो सकता है, जो फसह मनाने के लिए यरूशलेम में आया था, या वह अपने परिवार के साथ इस नगर में बस गया होगा। मरकुस ने संकेत दिया है कि शमौन ''जो गांवों से आ रहा था,'' ''सिकन्दर और रूफुस का पिता'' था (मरकुस 15:21; देखें लूका 23:26)। यदि उसके पाठक उन्हें पहचानते न होते तो उसे उनका नाम लिखने की क्या आवश्यकता थी? रोमियों 16:13 में पौलुस ने रूफुस की बात की, जो कि सम्भव है कि यही व्यक्ति हो, जिसका नाम मरकुस द्वारा बताया गया है।

स्थान (27:33, 34)

[33]और उस स्थान पर जो गुलगुता नाम की जगह अर्थात खोपड़ी का स्थान कहलाता है, पहुंचकर। [34]उन्होंने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उस ने चखकर पीना न चाहा।

आयत 33. हत्या किए जाने के स्थान को **गुलगुता** कहा जाता था, जो **खोपड़ी का स्थान** या ''खोपड़ी'' के लिए अरामी भाषा का शब्द है (लूका 23:33)। यह अंधेरा और अपसगुन वाला शब्द लातीनी भाषा के शब्द *Calvaria* (''कलवरी'') से मेल खाता है।

शायद यीशु की मृत्यु का सही-सही स्थान कभी पता न चल सके। पवित्र शास्त्र इतना बताता है कि वह स्थान नगर की शहरपनाह से बाहर था (इब्रानियों 13:12)। यह यहूदी व्यवस्था के अनुसार था (लैव्यव्यवस्था 24:14; गिनती 15:35; देखें 1 राजाओं 21:13; प्रेरितों 7:58)।

आज यरूशलेम में जाने वाले लोगों को दो स्थान दिखाए जाते हैं, जो गुलगुता हो सकते हैं। कैथोलिक धर्म गुलगुता को होली स्पल्कर के चर्च के अन्दर की चट्टान के रूप में मानता है। यह ढांचा मूल में चौथी शताब्दी ईस्वी में रोमी सम्राट कौन्सटैंटाइन ने बनवाया था। यह स्थान मसीह के समय यरूशलेम की शहरपनाह से बाहर रहा होगा। पहली सदी में इसके आस-पास कई कब्रें बनाई गई हो सकती हैं।

प्रोटैस्टेंट लोगों की परम्परा ''गोर्डन की कलवरी'' के नाम से प्रसिद्ध एक पहाड़ी की ओर ध्यान दिलाती है। पहाड़ी के एक ओर चट्टान पर मनुष्य की खोपड़ी जैसा आकार बन गया है। 1800 के दशक में कई लोगों द्वारा इसी जगह का प्रस्ताव दिया गया था, परन्तु प्रसिद्ध ब्रितानवी सैनिक हीरो जनरल चार्ल्स जॉर्ज गोर्डन द्वारा इसे प्रसिद्ध किया गया। परन्तु पहाड़ी का यह रूप बाद में होने वाली खुदाइयों के कारण हो सकता है। हो सकता है कि यह पहली सदी में खोपड़ी

जैसी न दिखाई देती हो। इसके अलावा बाग की कब्र सहित पास की कब्रों का समय पुरातत्व विज्ञानियों ने आठवीं या सातवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व का बताया है।[4]

आयत 34. गुलगुता में पहुंचने के बाद सिपाहियों ने जिन्हें क्रूस पर चढ़ाने का जिम्मा दिया गया था, यीशु को **पित्त मिला हुआ दाखरस पीने को दिया**। "पित्त" के लिए यूनानी शब्द (*cholē*) कड़वे स्वाद वाली चीज़ है (देखें भजन संहिता 69:21)। मरकुस 15:23 कहता है कि दाखरस "मुर्र" मिला हुआ था।

रोमी सिपाहियों ने यीशु को यहां पर दाखरस क्यों दिया? (1) क्या वे उसका और मज़ाक उड़ा रहे थे? उसे ताज़गी देने वाला पेय देने के बजाय क्या वे उसे कुछ कड़वा देना चाहते थे? सम्भवतया नहीं। (2) क्या उस पेय ने जिसमें नशा हो सकता है, वास्तव में उसकी पीड़ा और सताव को बढ़ाना था? क्या वे उसके दुख को बढ़ाने की सोच रहे थे? लगता नहीं है कि इन दोनों में से कोई बात हो। (3) क्या वह दाखरस यीशु को बेहोश करके उसकी पीड़ा को सहने में सहायता करने के लिए मानवीय आधार पर दिया गया था? यह यीशु को क्रूस पर उस चढ़ाए जाने से पहले दिया गया था। यह एक कारण हो सकता है। यह अन्तिम व्याख्या टालमुड में पाई जाने वाली परम्परा के साथ मेल खाती है: "जब किसी को मरने के लिए ले जाया जाता है, तो उसे उसके अंगों को सुन्न करने के लिए धूप के दाने वाला दाखरस का प्याला दिया जाता है। ... यरूशलेम की कुलीन स्त्रियां इसे दान करती और लाती थीं।"[5]

पित्त मिला दाखरस **चख कर** यीशु ने उसे **पीना न चाहा**। उसने इस कड़वे प्याले को पीने से इनकार कर दिया होगा, ताकि वह उस दुख के कटोरे को पूरा चख सके, जिसे वह पीने को था (26:39 पर टिप्पणियां देखें)।

क्रूस पर चढ़ाने का ढंग (27:35-37)

[35]जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया; और चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिए। [36]और वहां बैठकर उसका पहरा देने लगे। [37]और उसका दोषपत्र, उसके सिर के ऊपर लगाया, कि "यह यहूदियों का राजा यीशु है।"

आयतें 35, 36. क्रूस पर चढ़ाया जाना दिन के पहले पहर या प्रात: 9:00 बजे आरम्भ हुआ (मरकुस 15:25)। **जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया,** वाक्यांश क्रूस पर पूरी तरह से चढ़ाए जाने की नहीं, बल्कि यीशु के हाथ शहतीर से ठोके जाने, इसे लगाने और शहतीर में सीधे उसके पांव ठोके जाने के कदमों की बात है।

क्रूस पर चढ़ाया जाना प्राचीन जगत के मृत्युदण्ड देने का सबसे खतरनाक रूप था। इसे फारसी लोगों द्वारा फलस्तीन में आरम्भ किया गया था, परन्तु रोमियों ने इसमें महारत पा ली थी। सुसमाचार के विवरणों में वास्तविक क्रूसारोहरण का विस्तार से वर्णन नहीं है। इसकी आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह दृश्य इतना भयभीत करने वाला था कि मसीह की मृत्यु के समय के लोग इससे भली-भांति परिचित थे। इसके अलावा सुसमाचार के लेखक ने इस डर से कि वे उस अकथनीय आत्मिक आयाम से भटक न जाएं, क्रूस पर चढ़ाए जाने के शारीरिक पहलुओं को जोड़ने पर खामोश रहा।

और अपमान करते हुए दोषी व्यक्ति के कपड़े ऊपर से कमर तक खींच लिए जाते होंगे। यीशु के आकाश और पृथ्वी के बीच लटके होने पर रोमी सिपाहियों ने चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिए। वे उसके कुर्ते को बांटना नहीं चाहते थे, क्योंकि यह "बिन सीयन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था" (यूहन्ना 19:23, 24)। उसके कुर्ते के लिए उनके चिट्ठियां डालने के निर्णय से भजन संहिता 22:18 पूरा हुआ जिसमें कहा गया है, "वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं, और मेरे पहरावे पर चिट्ठी डालते हैं।"

फिर सिपाही यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई दोषी व्यक्ति को बचाने की कोशिश न करे, क्रूस के दृश्य पर नज़र रखने के अपने काम को अंजाम देने के लिए बैठ गए। सूबेदार का काम इस दृश्य के अपराधियों, जो उसके अधीन होते थे, मर जाने तक ध्यान रखना होता था (मरकुस 15:44, 45)।

आयत 37. रोमी लोग कई प्रकार के क्रूसों का इस्तेमाल करते थे, जिनमें से कम से कम तीन प्रकार T, †, और X के आकार हैं। यीशु के विरुद्ध दोष पत्र जो उसके सिर के ऊपर लगाया गया था, इस निर्णय का समर्थन करता है। उसे † के आकार वाले परम्परागत क्रूस पर ही चढ़ाया गया था। यह चिह्न किसी सिपाही द्वारा यरूशलेम की गलियों में चलते हुए या तो यीशु के गले में डाला गया या लाया गया होगा (27:31 पर टिप्पणियां देखें)। अपराधी के विरुद्ध लगे आरोपों का प्रचार करने की परम्परा ने निवारक का काम करना था। इससे देखने वाले सहम जाते थे जिससे वे रोम के विरुद्ध ऐसे अपराध करने से रुक जाते।

मत्ती के अनुसार उस चिह्न में कहा गया था, "यह यहूदियों का राजा यीशु है।" पूरे शिलालेख का अनुमान सुसमाचार के चारों विवरणों को मिलाकर लगाया जा सकता है। इसमें लिखा है, "यीशु नासरी है, यहूदियों का राजा।" यहूदी हाकिमों ने ज़ोर लगाया कि इसके शब्दों को बदलकर लिख दे, "*उसने कहा* मैं यहूदियों का राजा हूं।" परन्तु पिलातुस ने दृढ़ता से यह घोषणा करते हुए कि "मैं ने जो लिख दिया, वह लिख दिया" बदलाव करने से इनकार कर दिया था (यूहन्ना 19:21, 22)।

उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले तथा और अपमान (27:38-44)

[38]तब उसके साथ दो डाकू एक दाहिने और एक बाएं क्रूसों पर चढ़ाए गए। [39]और आने जाने वाले सिर हिला-हिलाकर उसकी निन्दा करते थे। [40]और यह कहते थे कि हे मन्दिर के ढाहने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को तो बचा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ। [41]इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर करके कहते थे, इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता। [42]यह तो "इस्राएल का राजा है।" अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें। [43]उस ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, यदि वह इस को चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, कि "मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।" [44]इसी प्रकार डाकू भी जो उस के साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, उसकी निन्दा करते थे।

आयत 38. यहां पर मत्ती ने पहली बार **दो डाकू** [जो] **उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए** थे। लूका 23:32 संकेत देता है कि इन दो अपराधियों को भी यीशु के साथ यरूशलेम की गलियों में घुमाया गया था। गुलगुता में पहुंचने पर उन्हें क्रूस पर चढ़ा दिया गया और उन्हें **एक दाहिने और एक बायें** उसके पास रखा गया। इस दृश्य से यशायाह की भविष्यवाणी पूरी हुई, जिसमें कहा गया था कि दुखी सेवक ने "अपराधियों के संग गिना" जाना था (यशायाह 53:12)।

गुलगुता का दृश्य एक मुख्य क्रूस को दिखाता था, परन्तु मत्ती ने कहा कि वहां दो क्रूस और भी थे। किसी न किसी तरह से ये तीन क्रूस एक जैसे थे। उन पर लटके तीनों आदमियों ने अपनी आंखों से देखा कि घुटन, गर्मी पसीना और उनके घावों में अपमान और कीड़ों को उन्होनें सहना था। उन्हें पास से गुज़रने वालों के घूरने को सहना था, जो अपमानजनक मृत्यु से मर रहे इन तीनों को देखकर घूरते थे। इनमें बड़े अन्तर भी थे। एक तो विद्रोह का क्रूस था, जो अपश्चात्तापी डाकू का था (लूका 23:39)। दूसरा मन फिराव का क्रूस था जो पश्चात्तापी डाकू का था (लूका 23:40, 41)। तीसरा छुटकारे का क्रूस था, जिस पर यीशु मसीह मरा।

मसीह के साथ मरने वाले छोटे-मोटे चोर नहीं थे। "डाकू" के लिए यूनानी भाषा का शब्द (*lēistai*) उन लोगों को संकेत देता है, जो अपने विषय की पूर्ति के लिए ज़बर्दस्ती और हिंसा का इस्तेमाल करने से नहीं झिझकते थे। वास्तव में यह शब्द कई बार क्रांतिकारियों के लिए होता है। बरअब्बा को (*lēistēs*; यूहन्ना 18:40) कहा गया है क्योंकि उसे बलवा और हत्या के लिए जेल में डाला गया था (मरकुस 15:7)। यीशु के आस-पास क्रूस पर चढ़ाए गए दो लोग उस दल का भाग हो सकते हैं, जिसका अगुआ बरअब्बा था, क्योंकि उन्हें भी उसी समय कैद में डाला गया था, जब उसे डाला गया था (26:55 पर टिप्पणियां देखें)।

दोनों डाकुओं के नाम नये नियम में नहीं बताए गए हैं। सदियों से दंतकथा में जो चाहे तथ्य नहीं है, डिसमास और गेस्तस, जोथाम और कामा, योआथास और मगतरस और टाइटस और डमकुस सहित कई अलग-अलग नाम दिए गए हैं।[f]

आयत 39. आने-जाने वाले उन्हीं लोगों का पहला समूह था, जो यीशु की **निंदा** करते हुए सिर हिलाते थे। क्रूस का स्थान नगर के थोड़ा बाहर था जिस कारण कई यहूदियों ने यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने को देखा (यूहन्ना 19:20)। पास से गुज़रने वाले लोग सम्भवतया वे यात्री होंगे, जो फसह मनाने के लिए यरूशलेम में आए थे।

पास से गुज़रने वाले वे लोग यीशु पर **सिर हिला** रहे थे। यीशु पर उनका सिर हिलाना भजन संहिता 22:6, 7 की भविष्यवाणी का पूरा होना था:

> परन्तु मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं,
> मनुष्यों में मेरी नामधराई है, और लोगों में मेरा अपमान होता है।
> वह सब जो मुझे देखते हैं, मेरा ठट्ठा करते हैं,
> और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं।

आयत 40. ये लोग कहते थे, **हे मन्दिर के ढाहने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को तो बचा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ**। उनकी भाषा में पिछली घटनाओं की ओर संकेत था। पहले तो उन्होंने यीशु के दावों को याद किया। मन्दिर

को पहली बार शुद्ध करते हुए उसने कहा था, "इस मन्दिर को ढाह दो और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा" (यूहन्ना 2:19)। यहूदियों ने शायद तीन सालों तक अपने मनों में उसकी बात का बिगड़ा हुआ संस्करण बनाए रखा था। उसकी यहूदी पेशी के दौरान झूठे गवाह उसकी बातों के अपने उलझन भरे विचार देते हुए उसके विरुद्ध बोले थे (26:60, 61 पर टिप्पणियां देखें)। स्पष्टतया यहूदी अगुओं ने लोगों के बीच में यह झूठा आरोप यीशु के विरुद्ध उन्हें भड़काते हुए लगाया था। दूसरा, अपने आपको साबित करने की कि ("यदि तू परमेश्वर का पुत्र है ...") जंगल में शैतान द्वारा यीशु की परीक्षाएं लेने का स्मरण कराती हैं (4:3, 6 पर टिप्पणियां देखें)। इस अवसर पर पास से गुज़रने वाले लोग यीशु को बड़ी शक्ति के प्रदर्शन से परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को साबित करने का ठट्ठा उड़ा रहे थे। विडम्बना यह है कि वही तर्क कि वह क्रूस पर रहा, उसके पुत्र होने को दिखाता था। वह पिता की इच्छा के अधीन रहा (इब्रानियों 5:7-9)।

आयत 41. दूसरा समूह जिसने यीशु पर ताने कसे थे **शास्त्रियों और पुरनियों** समेत **महायाजकों** का था। उनका नाम दिया जाना इस बात की पुष्टि करता है कि मसीह को यरूशलेम के अगुओं द्वारा पूरी तरह से ठुकराया गया था। क्रूसारोहरण के स्थल पर इस श्रेष्ठ समूह का होना यीशु के प्रति धार्मिक लोगों के क्रोध और शत्रुता की गहराई को दिखाता है।[7]

यूनानी शब्द (*empaizō* से) जिसका अनुवाद **ठट्ठा** करना है वह बच्चों के किसी दूसरे बच्चे को चिढ़ाने के कार्य का अर्थ देता है।[8] दुख की बात होती कि ये बड़े लोग जिन्हें यहूदियों में से आत्मिक रूप में सबसे परिपक्व होना चाहिए था, बिगड़े हुए बच्चों की तरह व्यवहार कर रहे थे! उन्होंने रात को यीशु की पेशी के समय उस पर थूकते हुए, मुक्कों से उसे मारते हुए और उसे थप्पड़ मारते हुए उसके साथ अपराधियों वाला व्यवहार किया था (26:67, 68)।

यीशु की मृत्यु के सबसे अधिक जिम्मेदार यही लोग थे, जिन्होंने उसे चांदी के तीस सिक्कों के लिए उनके सुपुर्द कर देने के लिए यहूदा के साथ सौदा किया था (26:14-16)। ये वही लोग थे, जिन्होंने उसके विरुद्ध आरोप लगाए थे और उसके मारे जाने के योग्य होने की घोषणा की (26:57-68; यूहन्ना 19:7)। उन्होंने पिलातुस पर उसे क्रूस पर चढ़ाने और यहूदी लोगों की भीड़ को उसे क्रूस देने के लिए शोर मचाने को उकसाया था (27:20-25)। मानवीय दृष्टिकोण से, यदि उनके हाथ में न होता, तो यीशु क्रूस पर न चढ़ाया जाता। तौभी यीशु ने उनकी दुष्ट चाल के आगे अपने आपको सौंप दिया, और क्रूस को वेदी में बदलकर परमेश्वर की अनन्त योजना के साथ मिला दिया (देखें प्रेरितों 2:23, 24)।

आयत 42. यहूदी अगुवे यह कहते हुए यीशु का ठट्ठा उड़ाते थे, **"इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता।"** वे उन आश्चर्यकर्मों का मज़ाक उड़ा रहे थे, जो उसने अपनी सेवकाई के दौरान किए थे। सामर्थ के इन कामों से परमेश्वर के संसार को हानि पहुंचाने वाले उन लोगों के लिए उसकी करुणा दिखाई गई थी। इससे भी बढ़कर वे परमेश्वर के पुत्र मसीह के रूप में यीशु की पहचान की ओर ध्यान दिलाते हुए जबर्दस्त चिह्न थे (11:2-6; यूहन्ना 20:30, 31)।

बेशक यीशु के पास अभी भी आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ थी और यदि वह क्रूस का विरोध कर रहा होता तो अपनी जान बचाने के लिए वह उसका इस्तेमाल कर सकता था। परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में रखते हुए वह दुख और मृत्यु का कटोरा पीने के लिए अपने

आपको सौंप रहा था। यदि उसे मनुष्यजाति को पाप से बचाना था तो वह अपने आपको नहीं बचा सकता था। यहूदी अगुओं ने यीशु के इस काम को न कर पाने को उसकी अयोग्यता मान लिया।

व्यंग्य के रूप में कहें तो क्रूर लोगों ने यीशु को इस्राएल का राजा मान लिया था। उसकी पेशी के दौरान महायाजक कैफा ने यीशु से पूछा था कि क्या वह "परमेश्वर का पुत्र मसीह" (26:63)। बाद में पिलातुस ने यीशु से पूछा था कि वह "यहूदियों का राजा" है (27:11)। यीशु ने दोनों ही लोगों को स्पष्ट उत्तर दिया था (26:64; 27:11)। राजा होने की इस दावे की झलक सिपाहियों के यीशु का मज़ाक उड़ाने में (27:28-31) और उसके सिर के ऊपर लिखे दोष पत्र "यह यहूदियों का राजा यीशु है" (27:37) में है।

यहूदी अगुओं ने आगे कहा, **"अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें।"** वे उस पर "हंस" रहे थे (लूका 23:35)। यीशु ने उन्हें यह साबित करने के लिए कि वह कौन था, पहले ही काफ़ी शक्ति दिखा दी थी पर फिर भी उन्होंने उसे ठुकरा दिया था। यदि वह क्रूस पर से उतर आता तो वे यह मान लेने के बजाय कि उसके बारे में उनका विचार गलत था, कोई और बहाना बना लेते। क्रूस पर अपनी मृत्यु में यीशु ने न केवल परमेश्वर की सनातन योजना को पूरा किया, बल्कि उसने अपनी ही शिक्षा का संसार को एक उदाहरण भी दे दिया (10:38, 39; 16:24-26 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 43. उन्होंने और कहा, **"उस ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, यदि वह इस को चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इसने कहा था कि 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।'"** उनका आरोप पूरी तरह से परमेश्वर की निन्दा थी। यह भाषा भजन संहिता 22:8 से मेल खाती है, जो कहता है, "उसका भरोसा यहोवा पर है; यहोवा ही उसे छुड़ाए, क्योंकि वह उससे आनन्दित है" (NIV)। यहूदी अगुवे परमेश्वर का पुत्र होने के यीशु के दावे पर कीचड़ उछाल रहे थे (26:63, 64)। वह यह मान रहे थे कि यदि परमेश्वर उससे प्रसन्न है, तो वह उसे बचा ले।[10] उन्हें मसीह के उस काम की, जिसे वह कर रहा था, कितनी कम समझ थी!

भीड़ में अन्य ठट्ठा उड़ाने वाले चाहे सीधे यीशु को कह रहे थे, पर यहूदी हाकिम ऐसा नहीं कर रहे थे। उनके शब्दों के तीनों वृत्तांतों में वे यीशु से नहीं, बल्कि एक-दूसरे से उसकी बातें कर रहे थे (27:41-43; मरकुस 15:31, 32; लूका 23:35)।

आयत 44. डाकू जो यीशु के साथ चढ़ाए गए थे ठट्ठा करने वालों के इस तीसरे समूह में थे।[11] पहले तो वे दोनों उसकी निन्दा करते हुए एक ही बोली बोल रहे थे। उनमें से एक ने कहा, "क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा" (लूका 23:39)।

मत्ती ने चाहे एक डाकू के मन को बदलने का वर्णन नहीं किया पर लूका 23:40-43 करता है। हमें यह नहीं बताया गया कि उसका मन कैसे बदल गया, परन्तु उसके बदलने से सच्चा मन फिराव हुआ। वह अपना अपमान करने वालों और उसे मार डालने वालों को क्षमा करने के लिए परमेश्वर से की गई यीशु की प्रार्थना सुनकर प्रभावित हुआ हो सकता है (लूका 23:34)। शायद वह मृत्यु को देख यीशु के व्यवहार से प्रभावित हो गया। जो भी कारण रहा हो, उसने ग्रहण करने वाले मन और कठोर मन दोनों में अन्तर दिखा दिया। उसने कहा, "हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना" (लूका 23:42)। यीशु ने उसको उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा" (लूका 23:43)।

क्रूसारोहण का अन्त और इस पर होने वाले चिह्न (27:45-54)

[45]दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अन्धेरा छाया रहा। [46]तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी? अर्थात हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे छोड़ दिया? [47]जो वहां खड़े थे, उन में से कितनों ने यह सुनकर कहा, वह तो एलिय्याह को पुकारता है। [48]उन में से एक तुरन्त दौड़ा, और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया। [49]औरों ने कहा, रह जाओ, देखें एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं। [50]तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए। [51]और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चट्टानें तड़क गईं। [52]और कब्रें खुल गईं; और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं। [53]और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए। [54]तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भुईंडोल और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, सचमुच "यह परमेश्वर का पुत्र था।"

आयत 45. पिलातुस के सामने यीशु से पूछताछ का आरम्भ लगभग प्रात: 6:00 बजे हुआ और क्रूस पर चढ़ाया जाना लगभग प्रात: 9:00 बजे हुआ था (27:1, 35 पर टिप्पणियां देखें)। **दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अन्धेरा छाया रहा।** "दोपहर" दिन के 12:00 बजे को और "तीसरा पहर" शाम के 3:00 बजे को कहा गया। यीशु छह घण्टे तक क्रूस पर रहा। दोपहर के आरम्भ से तीन घण्टों तक पृथ्वी पर अन्धेरा छाया रहा। लूका ने लिखा कि यह अन्धेरा इस कारण था क्योंकि "सूर्य का उजियाला जाता रहा" (लूका 23:45)। "उजियाला जाता रहा" के यूनानी शब्द (*ekleipō*) का अर्थ है "नाकाम" या "बुझ जाना।" यह हमारे शब्द "ग्रहण" का आधार है। परन्तु यह अन्धेरा सूर्य के सामान्य ग्रहण का नहीं था। ऐसा नहीं हो सकता था क्योंकि फसह के समय पर पूर्ण चांद निकला होता था। सूर्य और चांद पर ग्रहण लग ही नहीं सकता था। यह घटना अलौकिक ही होनी थी। बाइबल से बाहर के प्राचीन स्रोत यीशु की मृत्यु के समय इस और अन्य घटनाओं की बात करते हैं।[12] विशेष रूप से कलीसिया के आरम्भिक लेखक टरटुलियन ने टिप्पणी की है:

> उसी घड़ी जब सूर्य अपनी पूरी चमक में था, दिन का प्रकाश भी वापस ले लिया गया था। जो लोग इस बात से अवगत नहीं थे कि यह मसीहा के विषय में की गई भविष्यवाणी थी, उन्हें यही लगा कि यह एक ग्रहण है। *आपके अपने पुरालेखों में संसार की अद्भुत बात का वर्णन आज भी है।*[13]

मत्ती ने चाहे इसका विस्तार नहीं दिया, परन्तु उस दिन के अन्धकार का कोई सांकेतिक अर्थ ही होगा। प्रकाश से परमेश्वर की पवित्रता को दिखाया जाता है और अन्धकार से बुराई को (1 यूहन्ना 1:5)। इस कारण यह तथ्य कि यीशु के क्रूस पर टंगे होने के तीन घण्टों तक देश में अन्धेरा रहा का सम्बन्ध अवश्य ही उसके संसार के पापों को अपने ऊपर लेने के साथ थोड़ा बहुत

अवश्य था। पवित्र शास्त्र में अन्धकार को शोक करने और न्याय के साथ जोड़ा गया है (यशायाह 5:30; 13:9-11; योएल 3:14, 15; आमोस 8:9)। मनुष्य जाति को अपनी सारी बुराई के लिए जो दण्ड मिलना चाहिए था, मसीह ने उसे क्रूस पर अपने ऊपर ले लिया था (यशायाह 53:5, 6, 10, 11; 2 कुरिन्थियों 5:21; गलातियों 3:13; 1 पतरस 2:24; 3:18; 1 यूहन्ना 2:2; 4:10)। आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु की मृत्यु का दिन मानवीय इतिहास में सबसे काला दिन था!

आयत 46. तीसरे पहर के निकट यानी सायं 3:00 बजे के करीब, **यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी?** मत्ती चाहे यहूदी पाठकों के लिए लिख रहा था परन्तु उनमें से सारे लोगों को इब्रानी (अरामी) भाषा का पूर्ण ज्ञान नहीं होना था। इसलिए उसने सामान्य भाषा में जिसे लगभग हर कोई समझ सकता था, यूनानी में कहते हुए इसका अनुवाद कर दिया। वेदना भरी इस पुकार का अर्थ था, "**हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे छोड़ दिया?**" यीशु भजन संहिता 22:1 में से उद्धृत कर रहा था। मसीहा से सम्बन्धित इस भजन के अन्य हवाले इसी अध्याय में पहले भी मिले हैं (27:39, 43 पर टिप्पणियां देखें)।

मत्ती और मरकुस में लिखित क्रूस पर से यीशु का कथन केवल यही पुकार है। मत्ती 27:46 में "हे मेरे परमेश्वर" के लिए इब्रानी शब्द *एली* है, जबकि मरकुस 15:34 में इसका आरामी शब्द *एलोई* है। लूका और यूहन्ना दोनों ने वे तीन और कथन लिखे हैं, जो केवल उन्हीं विवरणों में पाए जाते हैं (लूका 23:34, 43, 46; यूहन्ना 19:26, 27, 28, 30), जो कुल मिलाकर सात हैं।

मत्ती और मरकुस में यीशु के शब्दों की व्याख्या कैसे की जाए? क्या परमेश्वर ने वास्तव में यीशु को त्याग दिया था? क्या वह यीशु को यहां तक छोड़ सकता था जबकि वे एक ही ईश्वरीय आत्मा हैं? सदियों से इस प्रश्न पर बहस होती रही है। कुछ लोग यह सुझाव देते हैं कि यीशु का स्वभाव दोहरा था जिसने उसे मनुष्य और परमेश्वर दोनों बना दिया, इस कारण परमेश्वर ने मनुष्य यीशु से मुंह मोड़ा था। यह विचार असम्भव प्रतीत होता है। अन्य यह प्रस्ताव देते हैं कि यीशु अपने मनुष्य स्वभाव की भावनाओं को व्यक्त कर रहा था, परन्तु वास्तव में उसे त्यागा नहीं गया था। वह त्यागे जाने की अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भजन संहिता 22:1 के शब्दों को दोहरा रहा हो सकता है।

परमेश्वर ने सचमुच में यीशु को त्यागा होगा, चाहे यह समझा पाना कठिन है कि ऐसा कैसे हो सकता था। यीशु पूरे अनन्तकाल में पहली बार और केवल यहीं पर अपने स्वर्गीय पिता से अलग होने के अनुभव की घोषणा करने के लिए पीड़ा में चिल्ला रहा था। जब पुत्र ने मनुष्यजाति के पाप को अपने ऊपर ले लिया था तो पिता ने उससे मुंह मोड़ लिया। किसी प्रकार और किसी अर्थ में परमेश्वर-मनुष्य को क्रूस पर परमेश्वर से थोड़े समय के लिए अलग किया गया था। इस दौरान "पिता का भयंकर क्रोध पाप रहित पुत्र के ऊपर उण्डेल दिया गया था, जो अनुपम अनुग्रह में उनके लिए, जो उसमें विश्वास रखते हैं, पाप बन गया।"[14]

यीशु की पुकार में चाहे हानि दिखाई देती थी पर इसमें भरोसा और आशा भी थी। ऐसे छोड़ दिए जाने के बाद यीशु पुकार उठा, "*हे मेरे* परमेश्वर।" उसने उस में जो अन्त में उसे बचा सकता था, भरोसा रखना कभी नहीं छोड़ा। यह समझना आवश्यक है कि भजन संहिता 22 जिसके शब्दों का इस्तेमाल यीशु ने क्रूस पर किया, एक विजयी नोट के साथ समाप्त होता

है, जो परमेश्वर के छुटकारे का जश्न मनाता है। वास्तव में भजन संहिता 22:22 को इब्रानियों 2:12 में मसीह को यह कहते हुए दिखाया गया है: ''मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा, सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा।''

आयत 47. क्रूस पर टंगे हुए, सांस लेने की कोशिश करते हुए यीशु के मुंह से निकले बोलों को समझना कठिन रहा होगा। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने यीशु के लिए कहा है:

> अब तक उसे क्रूस पर छह घण्टे के लगभग हो चुके थे और उसकी अत्यधिक पीड़ा और लहू बह जाने के बाद उसे बड़ी प्यास लगी। उसके सीने की मांसपेशियों में बड़ा खिंचाव हुआ, जिससे उसके हाथ लटके होने के कारण खिंच गए, और उसे सांस लेना कठिन हो गया।[15]

यीशु के पुकारने पर ''हे मेरे परमेश्वर'' (*Eli*), **जो वहां खड़े थे, उन में से कितनों ने** उसके शब्दों का अर्थ गलत समझ लिया। उनका कहना था, ''**वह तो एलिय्याह को पुकारता** है।'' इस नबी पर मौत नहीं आई थी (2 राजाओं 2:11, 12) और यह भविष्यवाणी की गई थी कि ''एलिय्याह'' आएगा (मलाकी 4:5) जिस कारण यहूदियों को पृथ्वी पर उसके वापस आने की उम्मीद थी (11:14; 16:14; 17:3 पर टिप्पणियां देखें)। उनका मानना था कि एलिय्याह सताए जा रहे धर्मियों की सहायता करेगा। यीशु को गलत समझने वालों को लगा कि वह मृत्यु से उसे छुड़ाने और अपने सताने वालों का न्याय करने के लिए बुला रहा है।

आयत 48. पास खड़े एक व्यक्ति या किसी सिपाही ने यीशु को कुछ पीने के लिए देने की कोशिश की। सुझाव दिया गया है कि वह चाह रहा है कि यदि एलिय्याह वापस आ जाए तो उसे उसके दाहिने हाथ बैठना मिल जाए। उस आदमी ने **स्पंज** लेकर उसे **सिरके** (*oxos*) में डुबोया और उसे प्रभु के मुंह से **सरकण्डे पर रखकर** लगा दिया। निश्चय ही यह यीशु के यह कहने के बाद किया गया था कि ''मैं प्यासा हूं'' (यूहन्ना 19:28)। उसने चाहे पित्त मिला हुआ दाखरस (*oinos*) लेने से इनकार कर दिया था (27:34), पर उसने सिरका पी लिया (यूहन्ना 19:30)। यह घटना भजन संहिता 69:21 के शब्दों की झलक देती है जो कहता है, ''... मेरी प्यास बुझाने के लिए मुझे सिरका पिलाया।''

दिया गया पेय पानी से पतला किया गया, सस्ता दाखरस हो सकता है जिसे आम तौर पर रोमी सिपाही पीते थे (देखें लूका 23:36)। इसे पतला किया गया था, जिस कारण यह न केवल यीशु की प्यास बुझाने बल्कि उसके होंठों को तर करने में भी सहायक था ताकि उसके शब्द साफ सुनाई दे सकें और उसके बोलने पर लोगों को समझ आ सके कि वह क्या कह रहा है।

आयत 49. स्पष्टतया रह जाने वाले जिन्हें लगा कि यीशु एलिय्याह को पुकार रहा है, अधिक चौकस थे। उन्होंने कहा, ''**देखें एलिय्याह उसे बचाने आता है या नहीं।**'' शायद उन्हें यह लगा था कि नबी एलिय्याह सचमुच में लौट चुका है या शायद वे यीशु का मज़ाक ही उड़ा रहे थे।

आयत 50. इसके तुरन्त बाद, **यीशु** यह कहते हुए कि ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं'' (लूका 23:46) **बड़े शब्द से चिल्लाया**। ''सौंपना'' या ''रक्षार्थ सौंपना'' (KJV) का अर्थ है ''त्यागना या समर्पण करना।'' यीशु के ''बड़े शब्द से'' पुकारने की बात

उसके "पूरा हुआ है" की पुकार के लिए भी लगती है (यूहन्ना 19:30)। विजय की इस पुकार के बाद उसने "सिर झुकाकर" (यूहन्ना 19:30) **प्राण छोड़ दिए**। वह काम जिसे करने के लिए यीशु को यहां पर भेजा गया था, पूरा हो गया था। यीशु ने कहा था कि किसी ने उसका प्राण लेना नहीं था, बल्कि उसने स्वयं इसे देना था और फिर ले लेना था (यूहन्ना 10:15-17)। उसने मृत्यु में अपनी आत्मा को सौंपकर और तीन दिन बाद मुर्दों में से जी उठकर अपने वायदे को पूरा किया।

आयत 51. दोपहर 12:00 बजे से लेकर अपराह्न 3:00 बजे तक पृथ्वी पर अन्धेरा छाया रहा (27:45)। अन्धकार की इस घटना के अलावा क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय और भी चमत्कारी घटनाएं हुईं। **मन्दिर का पर्दा** जो पवित्र स्थान को परम पवित्र स्थान से अलग करता था (देखें निर्गमन 26:31-33; इब्रानियों 9:3) **ऊपर से लेकर नीचे तक दो टुकड़े हो गया**। मिशनाह के अनुसार यह विशाल पर्दा "बहत्तर डोरियों वाले करघे पर बुना गया था, और हर डोरी चौबीस धागों की बनी थी। यह चालीस हाथ [साठ फुट] लम्बा और बीस हाथ [तीस फुट] चौड़ा था।"[16] जोसेफस ने इसे "नीले, और महीन सन, और सुर्ख लाल रंग और बैंजनी रंग से बुना और सचमुच में अद्‌भुत बुनाई वाला बेबिलोनियन पर्दा" कहा है।[17]

मत्ती में व्याख्या न दिए जाने के बावजूद पर्दे का फट जाना बड़े महत्व का था। यह लेवीय याजकाई और बलिदानों के सिस्टम वाली पुरानी वाचा के अन्त की ओर संकेत करता था। यीशु की भविष्यवाणी के अनुसार (24:1, 2) मन्दिर 70 ईस्वी में नष्ट हो जाना था, जिससे पशुओं के बलिदान बंद हो जाने थे। यीशु की मृत्यु के समय पर्दे का फट जाना यह संकेत देता है कि उसका बलिदान लोगों को परमेश्वर तक पहुंचने का एक नया और सिद्ध मार्ग देता है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने यीशु को हमारे बड़े महायाजक के रूप में दिखाते हुए पर्दे के रूपक से यह निष्कर्ष निकाला है:

> वह आशा हमारे प्राणों के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और *परदे के भीतर* पहुंचता है। जहां यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बनकर, हमारे लिए अगुआ की रीति से प्रवेश हुआ (इब्रानियों 6:19, 20)।

इब्रानियों के लेखक ने यह भी कहा कि "हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है, जो उसने *परदे* अर्थात अपने शरीर *में से होकर*, हमारे लिए अभिषेक किया गया है" (इब्रानियों 10:19, 20)।

एफ़. एफ़. ब्रूस ने परदे के इस फटने को "धर्मशास्त्रीय महत्व की घटना" बताते हुए कहा कि "यीशु की मृत्यु में, ... परमेश्वर हमारे ऊपर स्वयं प्रगट होता है और उस तक पहुंचने का मार्ग खोल दिया जाता है।"[18] यीशु के बलिदान ने पुराने नियम की बाधाओं को तोड़ दिया; इससे बलिदानों का युग खत्म हो गया और हमारे लिए परमेश्वर की उपस्थिति में जाने का रास्ता खुल गया (देखें कुलुस्सियों 2:14; इब्रानियों 8:13)।

यीशु की मृत्यु के समय होने वाला एक और आश्चर्यकर्म वह भूकम्प था, जिससे **चट्टानें तिड़क गईं**। केवल मत्ती के विवरण में ही उस आश्चर्यकर्म का उल्लेख है। कुछ लोग भूकंप को मन्दिर में पर्दे के फटने के कारण के रूप में देखते हैं, वचन में यह स्पष्ट नहीं किया गया है।

आयतें 52, 53. कब्रों का खुल जाना सीधे तौर पर भूकंप के कारण रहा हो सकता है। मुर्दों का जी उठना एक अलग आश्चर्यकर्म है। **सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं,** चाहे जी उठे ये लोग यीशु के जी उठने तक स्वयं यरूशलेम नगर में दिखाई नहीं दिए। हम यह मान सकते हैं कि ये लोग केवल थोड़ी देर के लिए मरे थे और दूसरे लोगों को उनका पता था; नहीं तो उनके जी उठने का महत्व उन लोगों के लिए जिन्होंने उन्हें देखा था, नहीं रहना था। हो सकता है कि लाज़र की तरह (यूहन्ना 11:43, 44; 12:2) वे जीवन की अपनी पहली अवस्था में बहाल कर दिए गए हों।

अन्धेरा चाहे यीशु के पाप का बोझ उठाने वाले वाला (27:45) होने का संकेत देता था और मन्दिर के पर्दे का फट जाना परमेश्वर तक नई पहुंच का संकेत देता है (27:51) परन्तु इन पवित्र लोगों के जी उठने में उन सभी विश्वासियों के अनन्त जीवन के लिए जी उठने की झलक थी। भविष्य में होने वाला पुनरुत्थान मसीह की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान से ही सम्भव होता है।

आयत 54. भुईंडोल और जो कुछ हुआ था, उसके साथ यीशु के मरने के ढंग (मरकुस 15:39) ने **सूबेदार** को, जो क्रूसारोहरण का इंचार्ज था, बहुत प्रभावित किया। उसका अन्य सिपाहियों के ऊपर भी जो **यीशु का पहरा दे रहे थे,** गहरा प्रभाव पड़ा। यह कठोरचित्त लोग जिन्होंने हज़ारों लोगों को क्रूस पर चढ़ाए जाते देखा था, यह सब **देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था** (14:33; 16:16 पर टिप्पणियां देखें)। मरकुस के सुसमाचार में यही बात केवल सूबेदार के लिए कही गई है (मरकुस 15:39)। सिपाहियों के झुण्ड द्वारा यीशु की ईश्वरीयता में अपने विश्वास को जताने के ढंग से वह प्रभावित हुआ होगा।

स्त्रियां दूर से यह सब देख रही थीं (27:55, 56)

[55]वहां बहुत-सी स्त्रियां जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई, उसके साथ आई थीं, दूर से यह देख रही थीं। [56]उन में मरियम मगदलीनी और याकूब और योसेस की माता मरियम और जब्दी के पुत्रों की माता थीं।

आयत 55. बहुत-सी स्त्रियां इस शुक्रवार के दिन मसीह को क्रूस पर चढ़ाए जाते देखतीं (मरकुस 15:40, 41; लूका 23:49; यूहन्ना 19:25-27)। वे **गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके साथ आई थीं।** ''सेवा'' के लिए यूनानी भाषा के शब्द (*diakoneō*) का अनुवाद ''के लिए उपाय'' (NRSV) या ''की सम्भाल'' (NLT) भी हो सकता है। विचार यह हो सकता है कि वे अपने आर्थिक संसाधनों से उसकी सहायता करती थीं (लूका 8:1-3) या वे उसके लिए खाना तैयार करती थीं (लूका 10:40)। शायद वे दोनों ही काम करती थीं।

प्रेरितों के विपरीत जो गतसमनी से भाग गए थे (26:56), साहसी स्त्रियां यीशु के प्रति वफ़ादार रही थीं। प्रेम से प्रेरित वे अन्त तक उसके निकट रहने के लिए अपने व्यक्तिगत घमण्ड और सुरक्षा को छोड़ देने को तैयार थीं। वे दूर खड़ी रहीं, पर इस तथ्य का भय नहीं माना जाना चाहिए। लोगों को विशेषकर जो उसके प्रति सहानुभूति रखते थे, क्रूस के पास से दूर रखने के लिए रोमियों ने क्रूस के गिर्द एक दायरा बना दिया होगा। यीशु के लिए अपनी सताई हुई आंखों को क्रूस के पास के परेशान करने वाले दृश्यों से मुड़कर उसकी मृत्यु पर इन विश्वासी स्त्रियों के

विलाप करने को देखना कितना सुकून भरा होगा!

आयत 56. मत्ती में इन स्त्रियों की एक सुन्दर सूची है। पहले **मरियम मगदलीनी** का नाम है, जो इस बात का संकेत देता है कि वह मगदला नामक इलाके से थी (15:39 पर टिप्पणियां देखें)। लूका 8:2 के अनुसार यीशु ने उस मनुष्य में से सात दुष्टात्माएं निकाली थीं। उसके लिए उसका समर्पण उसके जीवन में उन कामों के लिए, जो उसने किए थे, धन्यवाद था (27:61; 28:1 पर टिप्पणियां देखें)।

एक और **मरियम** का भी उल्लेख है; यह **याकूब और योसेस की माता** थी। मरकुस 15:40 उसे **छोटे याकूब की माता** बताता है। यह यूहन्ना 19:25 वाले क्लोपास की पत्नी हो सकती है।

अगली स्त्री **जब्दी के पुत्रों की माता** अर्थात याकूब और यूहन्ना की माता है (4:21, 22 पर टिप्पणियां देखें)। मरकुस में उसे सलोमी बताया गया है (मरकुस 15:40; 16:1)। यह वही थी, जो यीशु के राज्य में अपने पुत्रों को सम्मान की जगह दिलाने के लिए उनकी सिफ़ारिश करने उसके पास आई थी (20:20-23)।

लूका 23:49 के अनुसार ''जान-पहचान'' के और लोग ''दूर खड़े यह सब देख'' रहे थे। यूहन्ना 19:26, 27 संकेत देता है कि यीशु की माता मरियम प्रिय चेले यूहन्ना के पास ''खड़ी'' थी।

यीशु के चेले अविश्वास और घबराहट में खड़े थे, क्योंकि उन्हें यीशु के मरने की, विशेषकर इस प्रकार की कभी उम्मीद नहीं की थी। जब उसकी मृत्यु का कोई संदेह न रहा तो उनमें से अधिकतर लोग यह सोचकर कि उनकी उम्मीदें उसी के साथ मर गई हैं, निराश और दुखी होकर इधर-उधर जाकर कुछ स्त्रियों से अलग हो गए (27:61; लूका 23:55)।

✧✧✧✧✧ **सबक** ✧✧✧✧✧

यीशु ने स्वेच्छा से क्रूस का सामना किया (27:33-50)

जितना हम क्रूस के बारे में जानेंगे, उतना ही हम अपने उद्धारकर्त्ता से उस बलिदान के लिए जो उसने हमारे लिए किया प्रेम करेंगे और उसे सराहेंगे। क्रूस का अध्ययन करते हुए हमें गहरे विश्वास में आना चाहिए कि क्रूस पर चढ़ाया जाना कोई गलती या संयोग नहीं था। क्रूस परमेश्वर की सनातन मंशा का भाग था। यरूशलेम की पहाड़ी पर लगाए जाने से बहुत पहले क्रूस परमेश्वर के मन में था (देखें इफिसियों 1:3, 4; 2 तीमुथियुस 1:9; 1 पतरस 1:19, 20)।

हमारे लिए अपना प्रेम दिखाने के साथ-साथ पूर्ण न्याय को दिखाने का परमेश्वर के पास और कौन सा ढंग हो सकता था (रोमियों 3:24-26)? यीशु अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए आया, जिस कारण उसने क्रूस को एक आवश्यकता के रूप में देखा (16:21-23)। उसने क्रूस स्वेच्छा से स्वीकार कर लिया क्योंकि उसने अपने आपको परमेश्वर के सेवक के रूप में देखा।

यीशु को किस बात ने क्रूस पर रखा? (27:40)

रोमी सिपाहियों ने यीशु के हाथों में तब कील ठोके, जब उन्होंने उसे क्रूस पर रख दिया (देखें यूहन्ना 20:25), परन्तु उसे वहां किस बात ने रखा, जब दूसरों ने कहा, ''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ'' (27:40)? वहां कीलों ने नहीं (26:53; यूहन्ना 10:17, 18) बल्कि पिता की इच्छा ने रखा (26:39)। यीशु अपनी मृत्यु तक क्रूस पर रहा क्योंकि यह परमेश्वर की सनातन मंशा थी कि वह ऐसा करे (फिलिप्पियों 2:5-11)। उसने ''उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था'' क्रूस को सह लिया (इब्रानियों 12:2)। हमारी ओर से प्रेम के इस बड़े प्रदर्शन के उत्तर में, परमेश्वर और मसीह के लिए अपने प्रेम के कारण हमें परमेश्वर के राज्य में वफ़ादार बने रहना चाहिए, चाहे शैतान हमारे रास्ते में कोई भी रुकावट क्यों न डाले।

क्रूस पर यीशु के सात कथन (27:46)

मत्ती ने क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय यीशु के केवल एक कथन को लिखा है। परन्तु सुसमाचार के सभी विवरणों की समीक्षा करने पर हमें कुल सात कथन मिलते हैं:

1. ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34)।
2. ''मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा'' (लूका 23:43)।
3. ''देख यह तेरा पुत्र है, ... यह तेरी माता है'' (यूहन्ना 19:26, 27)।
4. ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34)।
5. ''मैं प्यासा हूं'' (यूहन्ना 19:28)।
6. ''पूरा हुआ!'' (यूहन्ना 19:30)।
7. ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं'' (लूका 23:46)।

डेविड स्टिवर्ट

''स्वर्गलोक'' क्या है? (27:50)

शुक्रवार रात से रविवार प्रात: तक के तीन दिन के समय के दौरान यीशु की आत्मा कहीं थी। कहां थी? चाहे उसने अपनी आत्मा पिता के हाथ सौंप दी (लूका 23:46) पर वह उस समय स्वर्ग में वापस नहीं गया था (यूहन्ना 20:17)। उसने पश्चात्तापी डाकू से कहा था, ''आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा'' (लूका 23:43)। अनुवाद हुए शब्द ''स्वर्गलोक'' यूनानी शब्द (*paradeisos*) का अर्थ है ''सुन्दर उपवन या पार्क,'' परन्तु स्वर्गलोक या पैराडाइज़ (फिरदौस) कहां है? यीशु निश्चय ही कब्र की बात नहीं कर रहा था, क्योंकि अन्धकार भरी कब्र स्वर्गलोक नहीं है।

नया नियम शारीरिक जीवन और लोगों की आत्माओं के अनन्त निवास के बीच की अवस्था को दिखाता है। इस स्थान का नाम ''हेडिस'' है। यह अदृश्य मृतकों का स्थान अर्थात शरीर से अलग हुई आत्माओं का स्थान है। आत्मा के इस अस्थाई निवास को धनवान और लाज़र के दृष्टांत

में यीशु द्वारा समझाया गया है (लूका 16:19-31)।

धर्मी और अधर्मी दोनों ही हेडिस या अधोलोक में जाते हैं, परन्तु दोनों एक ही स्थान पर नहीं जाते। यीशु के दृष्टांत में भिखारी लाज़र को अब्राहम की गोद में सुकून दिया जा रहा था जबकि धनवान "पीड़ा" में था (लूका 16:22, 23)। दोनों को एक बड़ी गड्ढे के द्वारा अलग किया गया था (लूका 16:26)। जब यीशु मरा तो वह स्वर्गलोक में गया (लूका 23:43)। इसका अर्थ यह हुआ कि अधोलोक के दो भाग थे, एक पीड़ा का दूसरा शांति का स्थान। पुनरुत्थान या जी उठने के दिन अधोलोक मुर्दों को छोड़ देगा (प्रकाशितवाक्य 20:13)। पीड़ा के स्थान में रहने वालों को नरक में डाल दिया जाएगा, जबकि स्वर्गलोक में रहने वालों को स्वर्ग में भेज दिया जाएगा।

टिप्पणियां

[1]क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान पर सीधा खड़ा शहतीर आमतौर पर जमीन में रहने दिया जाता था। उस जगह पहुंचने पर दोषी व्यक्ति के हाथों में कील ठोंक दिए जाते या आड़े शहतीर से बांध दिए जाते थे। इसे खड़ा कर दिया जाता और गाड़े गए शहतीर से जोड़ दिया जाता, जिसके बाद व्यक्ति के पांव गाड़े गए शहतीर से बांध दिए जाते थे। [2]प्लुटार्क *मोरेलिया* 554बी। [3]जोसेफस *अगेंस्ट अपियन* 2.4. [4]*जौंडरवन इलस्ट्रेटिड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री*, अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक*, संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 178 में माइकिल जे. विलकिंस, "मैथ्यू"; *द इन्टरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया*, संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:523-24 में डेविड एफ. पेन, "गुलगुथा।" [5]टालमुड *सन्हेड्रिन* 43ए; देखें नीतिवचन 31:6. [6]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 162; मैज़गर, 57-58, 153. [7]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 717. [8]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट*, संपा. गरहर्ड किट्टल एंड गरहर्ड फ्रैडरिक, संक्षिप्त तथा अनुवाद ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 758 में जी. बरट्रेम, "*paízō*." [9]भजन संहिता 22 की पिछली आयत में सिर हिलाने की बात है (27:39 पर टिप्पणियां देखें)। [10]देखें सुलैमान का सर्वश्रेष्ठ गीत 2:17-20.

[11]लूका ने चार सिपाहियों वाले एक चौथे दल की बात की है (लूका 23:36, 37)। [12]सुसमाचार के विवरणों में से लेते हुए ओरिगन ने मसीह के क्रूसारोहरण के दौरान होने वाले अन्धकार की ऐतिहासिकता को सामने लाया है। (ओरिगन *अगेंस्ट सेल्सस* 2.33.) इस परम्परा को छद्म पत्र में भी रखा गया है, जिसके पुन्तियुस पिलातुस द्वारा लिखे होने का दावा किया जाता है। (*लैटर ऑफ़ पाइलेट टु तिब्रियुस I*) [13]टर्टुलियन *अपोलोजी* 1.21. [14]जॉन मैकआर्थर, जूनि., *द मैकआर्थर न्यू कमैंट्री मैथ्यू 24-28* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1989), 270. [15]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री*, अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 246. [16]मिशनाह *शेकालिम* 8.5. [17]जोसेफस *वार्स* 5.5.4. [18]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 246.